दूसरों की सोच से अधिक कर दिखाना ही आपकी सफलता है।
– अज्ञात

‘फेयर’ शब्द हटाने का फैसला

जॉर्ज फ्लॉयड की श्वेत पुलिसकर्मी द्वारा दिनदहाड़े हत्या की घटना के बाद जिस तरह से न केवल अमेरिका में बल्कि पूरी दुनिया में रंगभेद के खिलाफ माहौल बना है और ‘ब्लैक लाइव्स मैटर’ के नारे के साथ यह आंदोलन फैलता चला गया है, उसका असर भारत पर भी पड़ना लाजिमी है।

नवीन जोशी।

गोरापन बढ़ाने का दावा करने वाली एक चर्चित ब्यूटी क्रीम की निर्माता कंपनी ने उसके नाम से ‘फेयर’ शब्द हटाने का फैसला किया है। कोई कंपनी अपने किसी प्रॉडक्ट के नाम में क्या बदलाव करती है, यह आम तौर पर उसका अपना मामला होता है लेकिन इस फैसले की पृष्ठभूमि इसे एक कंपनी का अंदरूनी मामला भर नहीं रहने देती। कुछ समय पहले अमेरिका में एक अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड की श्वेत पुलिसकर्मी द्वारा दिनदहाड़े हत्या की घटना के बाद जिस तरह से न केवल अमेरिका में बल्कि पूरी दुनिया में रंगभेद के खिलाफ माहौल बना है और ‘ब्लैक लाइव्स मैटर’ के नारे के साथ यह आंदोलन फैलता चला गया है, उसका असर भारत पर भी पड़ना लाजिमी है। हमारे यहां इस नारे के साथ कोई बड़ा आंदोलन तो नहीं शुरू हुआ, लेकिन पहले से रंगभेद के मसले पर उठ रही आवाजों को इस माहौल ने एक नई ताकत दे दी है। वैसे, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में रंगभेद और नस्लभेद का जो रूप रहा है, वह भारत में कभी नहीं रहा। यह भी रेखांकित किया जाता रहा है कि हमारे यहां राम और कृष्ण जैसे भगवान के रूप भी सांवले ही रहे हैं।

एक घर में अपने ही बच्चों के अलग–अलग रंग को लेकर खुद मां–बाप और परिवारजन भी हंसी–मजाक करते रहते हैं। इसका इसका मतलब यह नहीं होता कि वे अपने बच्चों के साथ या भाई–बहनों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार के हिमायती हैं। लेकिन इन दलीलों से इस हकीकत का कुछ नहीं बिगड़ता कि भारतीय समाज में भी गोरेपन को लेकर जबर्दस्त आग्रह है। इसकी झलक हमें त्वचा के रंग के आधार पर लोगों के लिए प्रयोग किए जाने वाले विशेषणों में ही नहीं, शादी के लिए दिए जाने वाले विज्ञापनों में भी साफ–साफ मिलती है। यह आग्रह निश्चित रूप से काली या सांवली त्वचा वालों के मन में एक तरह का हीनताबोध पैदा करता है।

इसी हीनताबोध को भुनाने की सफल कोशिश गोरापन बढ़ाने वाली क्रीमों के लगातार बढ़ते बाजार के रूप में देखी जा सकती है। इसके लिए गढ़े जाने वाले विज्ञापन भी युवाओं की इसी असुरक्षा को निशाना बनाते हैं जिससे क्रीम की बिक्री बढ़ने के साथ–साथ समाज में त्वचा के रंग को लेकर मौजूद पूर्वाग्रह की जड़ें भी मजबूत होती हैं। इसीलिए देश–विदेश में रंगभेद के खिलाफ बढ़ती चेतना ने अगर कंपनी को इस प्रॉडक्ट के नाम में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया है तो यह अच्छी बात है। इस अर्थ में नहीं कि इससे समाज में गोरे–काले का भेद रातोंरात समाप्त हो जाएगा।

सिर्फ इस अर्थ में कि जिस प्रक्रिया ने एक बहुराष्ट्रीय कंपनी को यह अहसास कराया कि समाज की उन्नत चेतना के खिलाफ खड़े दिखना उसके हित में नहीं है, वही प्रक्रिया समाज के पूर्वाग्रही हिस्सों को यह सिखा सकती है कि चमड़ी का रंग पकड़ कर बैठे रहने में अब कोई समझदारी नहीं है।

स्वस्थ दुनिया

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। हमारी हजारों साल की वैदिक परंपरा को वैश्विक मंच मिला है। योग का प्रयोग अब दुनिया भर में चिकित्सा विज्ञान के रूप में भी होने लगा है, उसे स्थिति हमें अपने जीवन के साथ जीने का नजरिया भी बदलना होगा। योग से संबंधित यूनिवर्सिटी, शोध संस्थान, आयुर्वेद मेडिसिन उद्योग नई उम्मीदें और आशाएं लेकर आएगा। भारत और दुनिया भर में योग के लिए संस्थान स्थापित हुए हैं। योग को पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। योग स्वस्थ दुनिया की तरफ बढ़ता कदम है। इसका सहभागी बन अपनी जिंदगी को आइए हम शांत और खुशहाल बनाएं। परिवार जब स्वस्थ होगा तो सेहतमंद समाज का निर्माण होगा। मन्दिर में भगवान के दर्शन करें। मन में यह भाव लाये – मेरे भगवान की मेरे ऊपर बहुत कृपा हुई ,आज मेरे प्रभु ने मुझे यह सुयोग दिया है।

संपादकीय

पिछड़े भी चपेट में

इस दौर में एक खास चीज यह देखने को मिली है कि पिछड़ी जातियों के लोगों के साथ भी जातिगत उत्पीड़न और भेदभाव की घटनाएं देखने को मिल रही हैं। उन पिछड़ी जातियों के साथ भी जो सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर सवर्णों के बराबर होने का दावा करती रही हैं। प्रतापगढ़ में पटेल जाति के लोगों के साथ यही हुआ। हिंसा पर उतारू हमलावरों ने वहां बार–बार कहा कि ‘तुम लोग हमारी बराबरी करोगे? टाइल्स वाले घरों में रहोगे?’ ध्यान रहे, ऐसे ही तर्क दलित उत्पीडन के समय भी दिए जाते हैं। तो ये घटनाएं किस तरफ इशारा कर रही हैं? क्या इनसे यह सिद्ध नहीं होता कि उदारवादी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत वंचित और पिछड़ी जातियों को जो थोड़ी–बहुत समानता और अधिकार हासिल हुए थे, उन्हें भी इस महामारीजन्य परिस्थिति ने उनसे छीन लिया है और वर्चस्वशाली जातियों को उनका दमन करने की नई दलीलें उपलब्ध करा दी हैं?

कोविड–19 महामारी को वर्चस्वशाली सामाजिक शक्तियों ने भी अपने हित में एक अवसर का रूप दे दिया है। सरकार की गतिविधियों और निर्णय लेने के तरीके से जाति व्यवस्था के नियमों को और बल मिला है। यह अनायास नहीं है कि देश के तमाम हिस्सों से जातिगत उत्पीड़न और हिंसा की घटनाओं की खबर आने लगी है। लखनऊ में चोरी के आरोप में दलित नौजवानों के बाल काट दिए गए और गले में जूता पहनाकर घुमाया गया। अमरोहा में मंदिर में प्रवेश करने के कारण एक दलित की हत्या कर दी गई। गोरखपुर के पोखरी गांव में दलित मोहल्ले पर दबंगों ने हिंसक हमला किया।

भारतीय समाज पहले से ही विभिन्न जातियों में बंटा हुआ है और उनके बीच पर्याप्त सामाजिक एकता का अभाव है। ऐसे में ‘सामाजिक दूरी’ की धारणा लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दौरान हासिल न्यूनतम एकता को भी चुनौती देती है।

छुआछूत का नया रूप

राम नरेश राम।

कोरोना महामारी के संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से जारी निर्देश में बीमारी से बचाव के लिए ‘शारीरिक दूरी’ पद का इस्तेमाल किया गया है लेकिन हमारे यहां सरकारी रिपोर्ट्स और मीडिया में ‘सामाजिक दूरी’ जैसे पद का इस्तेमाल हो रहा है। यह पद अपने आप में विभाजनकारी प्रवृत्ति वाला है। एक तरफ यह लोगों में भय का भाव भरता है, दूसरी तरफ सबसे करीबी लोगों में भी एक–दूसरे से जुड़े रहने की प्रवृत्ति को कम करके अकेलेपन का भाव पैदा करता है। भारतीय समाज पहले से ही विभिन्न जातियों में बंटा हुआ है और उनके बीच पर्याप्त सामाजिक एकता का अभाव है। ऐसे में ‘सामाजिक दूरी’ की धारणा लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दौरान हासिल न्यूनतम एकता को भी चुनौती देती है।

यह कहना दोहराव होगा कि कोविड–19 की महामारी मानव सभ्यता के ज्ञात इतिहास में सबसे बड़ा संकट बनकर आई है। इसने पूरी दुनिया को एक साथ अपने दायरे में ले लिया है। इसीलिए पूरी दुनिया मानव सभ्यता के आदिम दौर को बड़ी शिद्दत से याद कर रही है और लोग उस दौर से नजदीकी महसूस कर रहे हैं। आपने सोशल मीडिया पर देखा होगा कि लोग

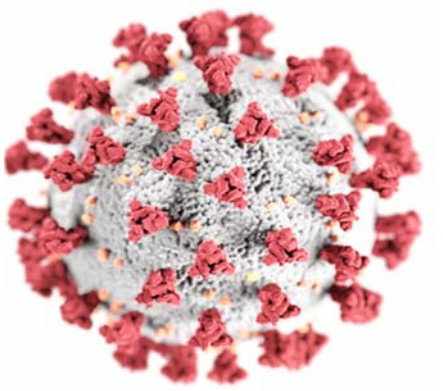

अपनी पुरानी तस्वीरें साझा कर रहे हैं। बहुत से लोग यह भी सोचने लगे हैं कि ऐसी विकट आपदाओं से निपटने के लिए पुरानी ग्रामीण अर्थव्यवस्था बहुत काम की चीज है। इसी क्रम में दुनिया पर किसी न किसी रूप में शासन करने वाले दलों, धर्मों और जातियों ने भी इसको अपने लिए सुनहरे अवसर के रूप में परिभाषित करना शुरू कर दिया है। कोरोना संक्रमण की बीमारी है लेकिन इसे भारत में छुआछूत की बीमारी के रूप में देखा जा रहा है। भारत में छुआछूत की प्रथा के रूप में जातिवाद का निकृष्टतम रूप पहले से ही मौजूद है। इसलिए बहुत सारे लोगों को यह कहने का सुनहरा मौका मिल गया है कि दरअसल जाति व्यवस्था भी भारतीय समाज में ऐसे ही किसी ऐतिहासिक पड़ाव की उपज है।

लोगों ने जाति व्यवस्था की वैज्ञानिकता को प्रमाणित करने की मुहिम छेड़ रखी है और यहां तक दावा करने लगे हैं कि ऐसी ही बीमारियों से बचने के लिए उनके पूर्वजों ने जाति व्यवस्था जैसा वैज्ञानिक इंतजाम कर रखा है। पुरानी सामाजिक व्यवस्था को याद करने का यह भी एक पहलू उभर कर सामने आया है। पिछले दिनों भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार मुकुल केशवन ने ‘कास्ट एंड कंटेजन’ शीर्षक से ‘द टेलीग्राफ’ में एक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने दिखाया कि कैसे भारत में मुस्लिम समुदाय और डिजिटल उपभोक्ताओं की जरूरतें पूरी करने वाले लोग आज के समय के नए दलित हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि कोविड महामारी से बचने के जो उपाय हैं वे बहुत हद तक जाति व्यवस्था में पहले से ही व्याप्त पवित्रता की अवधारणा को पुष्ट करते हैं। आखिर जिन लोगों को घरों में रहने की हिदायत दी जा रही है, वे अपनी जरूरत के सामान कैसे हासिल करेंगे? जाहिर है, इसके लिए एक ऐसा तबका जरूरी है जो घरों में सामान पहुंचाए। उनकी पूर्व प्रचलित जातिगत पहचान के परे हम उनके साथ वे ही सावधानियां बरतेंगे जो किसी तथाकथित उच्च जाति के व्यक्ति द्वारा कथित निम्नजाति के व्यक्ति के साथ बरती जाती हैं।

अष्टयोग- 4948

4	7		6		2	
	34	6	38		25	
5	1			6	2	4
	30	1	33		34	
3			4		1	6
	31	4	31	4	34	
2	3		4			7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4947 का हल

7	6	5	4	1	3	2
4	36	2	34	6	26	1
5	1	6	3	7	2	4
6	34	1	33	3	30	5
3	5	7	4	2	1	6
2	27	4	35	4	36	7
1	2	3	6	5	7	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

विरोध करने पर गांव पर हमला

मोहन। जौनपुर के एक दलित मोहल्ले में आग लगा दी गई। आजमगढ़ में दलित लड़की को छेड़ने का विरोध करने पर गांव पर हमला हुआ। महराजगंज के क्वारंटीन सेंटर से खबर थी कि वहां सवर्ण लोग दलितों द्वारा बना खाना नहीं खा रहे। वे रात में अपने घरों में रहते थे और दिन में सेंटर पर आ जाते थे। ऐसे ही आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में दलित समुदाय के 57 परिवारों के एक टोले में से किसी को भी पहाड़ी से नहीं उतरने दिया जा रहा है। बाकी गांव वालों को लगता है कि ये गंदे लोग हैं इसलिए कोरोना फैला सकते हैं। इसी तरह की घटनाएं तमिलनाडु में भी हुई हैं। खबरें बता रही हैं कि जातिगत उत्पीड़न और हिंसा के मामले तमिलनाडु, गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार में अन्य राज्यों से ज्यादा हुए हैं। इस तरह छुआछूत का एक नया संस्करण हमारे सामने है, हालांकि यह ज्यादा दिन चलने वाला नहीं है, क्योंकि यह बीमारी आज नहीं तो कल खत्म होगी ही।